श्री जनार्दन महाराज द्वारा यूट्यूब में दिए जवाब (जिसे नीचे जोड़ा है) की प्रतिक्रिया

हम विशेष आभार व्यक्त करना चाहतें क्यों की उन्होंने अपने ही उत्तर से प्रमाण कर दीया है की सतपंथ का दसावतार ग्रंथ मिलावटी है और हिन्दू शस्त्र के अनुरूप नहीं है। एवं रियल पाटीदार द्वारा प्रकाशित वीडियो में उठाए तमाम मुद्दे सही हैं। आइए देखतें हैं उन्हीं की द्वारा प्रस्तुत ग्रंथों/ प्रमाणों के माध्यम से।

रियल पाटीदार वीडियो में उठाए गए मुख्य मुद्दे / प्रश्न यह थे।

विडिओ: Series 79 -SKNAS 1 -https://youtu.be/J_vQC19eR0I

Comment:
https://www.youtube.com/watch?v=J_vQC19eR0I&lc=UgzXNohknjpZKXhtx9J4AaABAg
https://www.youtube.com/watch?v=J_vQC19eR0I&lc=UgyLUNR-RxaNTAtqWKB4AaABAg

१) अर्जुन द्वारका आए तब तक कृष्ण जीवित थे। **प्रतिक्रिया:** खुद श्री जनार्दन के प्रमाणों में लिखा हैं की कृष्ण का मृत शरीर अर्जुनने ढूंढ निकाला (अध्याय ३८ -देखो श्री जनार्दनजी के जवाब का पेज ४)। इसलिए जनार्दनजी कथा में जो बतातें हैं की अर्जुन आने तक कृष्ण जीवित थे, उनकी बातचीत हुई, वह बात असत्य हैं यह खुद श्री जनार्दनने प्रमाणित कर दिया।

२) कृष्ण की मृत्यु हो जाने के बाद तक दुर्योधन बेहोश थे, यानी महाभारत की लड़ाई के ३५ साल बाद तक। **प्रतिक्रिया:** यहाँ जनार्दनजी अपने उत्तर में आधी बात बतातें हैं। भीम के साथ गधा युद्ध के बाद कुछ दिनों तक दुर्योधन बेहोश थे, इस बात का विवाद नहीं है। वास्तविकता यह है की अश्वत्थामा द्वारा पांडवों के पुत्रों की हत्या के बाद दुर्योधन की मृत्यु हो गई। दुर्योधन की मृत्यु से महाभारत की लड़ाई समाप्त हो गई, जो केवल १८ दिनों तक चली थी। पर श्री जनार्दनजी कथा में बतातें है की कृष्ण की मृत्यु के बाद, खुद कृष्ण द्वारा कथाकथित बुध अवतार लेने के बाद, वहाँ जाकर दुर्योधन को खुद मरतें हैं, यह बात असत्य है। वह इसलिए की महाभारत के युद्ध के पश्चात ३५ वर्षों के बाद कृष्ण की मृत्यु हुई है। इसलिए दुर्योधन कम से कम ३५ साल तक बेहोश थे, यह बात असत्य हैं। यहाँ पर जनार्दन जी केवल अधूरी बात बताकर लोगों को भ्रमित कर ३५ सालों वाला मुद्दा भुलाने की कोशिश कर रहें हैं।

३) कृष्ण के शरीर को मछली मुंह में दबाकर द्वारका से ओडिसामें पूरी ले गई। **प्रतिक्रिया:** इस बात के समर्थन में श्री जनार्दन महाराज हिन्दू शस्त्रों का कोई प्रमाण नहीं दे सके।

४) भगवान जगन्नाथ को बुध्ध अवतार बताया। **प्रतिक्रिया:** इस मुद्दे पर श्री जनार्दनजी ने भर-भर कर जो प्रमाण प्रस्तुत किए हैं, वह केवल यह कह रहें हैं की श्री जगन्नाथ भगवान कृष्ण का स्वरूप हैं। हमारे वीडियो में हमने भी यही बात कहीं हैं। इसमें कोई विवाद नहीं है। विवाद इस बात का है की भगवान जगन्नाथ को बुध अवतार किस आधार पर बताया गया है? इसका कोई प्रमाण श्री जनार्दन महाराज नहीं दे पाए हैं। बिन जरूरी प्रमाणों (पेज ११,१२,१३ और १४) और आदर्शवादी बातों (पेज १५ और १६) के विषय में लंबीलंबी बातें कर लोगों को मुख्य मुद्दों से दूर करने का प्रयत्न के अलावा कुछ नहीं लग रहा हैं।

५) यदु वंश के विनाश का श्राप गांधारीने दिया था। **प्रतिक्रिया:** इस मुद्दे पर जो प्रमाण श्री जनार्दनजीने प्रस्तुत किए हैं, वह गलत है। पेज ७ और ८ में जो प्रमाण प्रस्तुत किए हैं, वह खुद बतातें हैं की ऋषियों ने क्रोध में उनका भविष्य कहा था, ना की उन्हें श्राप दिया। क्रोध और श्राप में बहुत बड़ा अंतर होता है। श्री जनार्दन महाराजने झूठे प्रमाण प्रस्तुत किए हैं, जो आपके सामने है।

६) मुंबई हाई कोर्ट का सन १८६६ का केस जिसमे ताकिया की मदद से सतपंथ में हिन्दू देवी देवताओं का उपयोग इस्लाम धर्म परिवर्तन के लिए इमामशाहने दसावतार ग्रन्थ लिखा है। **प्रतिक्रिया:** इस मुद्दे पर श्री जनार्दनजी बचाव नहीं कर सके हैं।

Series 80 -SKNAS 2 -https://youtu.be/487spIrAH-Y

Comment:
https://www.youtube.com/watch?v=487spIrAH-Y&lc=Ugw8UYoFpmefdy6XTu14AaABAg
https://www.youtube.com/watch?v=487spIrAH-Y&lc=UgwFxGaQ73dfNmlr8G94AaABAg

१) प्लास्टिक सर्जरी – स्वरूप बदलना – लेकिन आपने कहा की दुनिया की सबसे पहली प्लास्टिक सर्जरी भगवान ने पांडवों पर की। **प्रतिक्रिया:** शस्त्रों में इससे पहले कई प्रसंग है जिसमें किरदारों ने अपने रूप बदलें हैं। तो जनार्दनजी के हिसाबसे तब प्लास्टिक सर्जरी हुई होगी ना ? तो फिर पांडवों की दुनिया में सबसे पहली प्लास्टिक सर्जरी की बात कहाँ से आई। वास्तव में पांडवोंने तो केवल वेश -भूषा बदली थी, उनपर कोई प्रक्रिया नहीं हुई थी।
२) वास्तव में अज्ञात वास के समय पर पांडवों के साथ ना कृष्ण थे ना व्यास जी। **प्रतिक्रिया:** श्री जनार्दन जी अपनी कथा में बतातें हैं की भगवान कृष्ण और व्यास साथ में थे। इस बात पर श्री जनार्दनजी अपने बचाव में कोई भी प्रमाण नहीं दे पाए।
३) महाभारत में पांडवों के अज्ञात वास दरम्यान जो सिंह प्रकट होने की बात हिन्दू शस्त्रों में नहीं पर इमामशाहने बताई है, यह बात श्री जनार्दनजीने अपने जवाब (पेज १६) में स्वीकारी है। **प्रतिक्रिया:** इससे श्री जनार्दनजीने साबित कर दिया की इमाम शाह हिन्दू शस्त्रों में मिलावट कर के ही सतपंथ दसावतार ग्रंथ लिखा है।
४) कुँवारिका धरती वाली बात भी हिन्दू शस्त्रोंमें कहीं नहीं है और निष्कलंकी नारायण की कथा भी हिन्दू शस्त्रोंमें कहीं नहीं है। पृथ्वी माता का मंदिर और उसकी पूजा करते रहो, यह तमाम कहानियाँ का कोई आधार हिन्दू शस्त्रों में नहीं है। **प्रतिक्रिया:** यह बात ऊपर बताए सिंह की बनावटी कहानी के साथ जुड़ी है। इसलिए इस मुद्दे पर भी श्री जनार्दनजी अपना कोई भी बचाव नहीं कर पाए।
५) पांडाओंने जहां शस्त्र छुपाए थे वह जगह अलवर (राजस्थान) के पास है, पर सतपंथ दसावतारमे उसे पीराणा (गुजरात) में बताया। **प्रतिक्रिया:** इस मुद्दे पर श्री जनार्दनजी अपना कोई भी बचाव नहीं कर पाए।
६) पिराना की जगह सैयद इमामशाह महाराज की दरगाह है और वह मुस्लिम कबरस्थान में है। **प्रतिक्रिया:** इस मुद्दे पर भी श्री जनार्दन कुछ नहीं बोले हैं।

इनमें से श्री जनार्दनने एक भी प्रश्न अथवा मुद्दा का योग्य और संतोष कारक उत्तर नहीं दे पाए हैं। बल्कि उन्होंने अपने जवाब में जो प्रमाण प्रस्तुत किए हैं, वह उन्हीं की बात को झुठलातें हैं, इसलिए उनका विशेष धन्यवाद करतें हैं।

श्री जनार्दनजी द्वारा उनके विरोधीओं को हल्का, धर्म विरोधी, देश विरोधी, इत्यादि बतातें हैं। और उनके / सतपंथ के द्वारा समाज कल्याण का काम करने की बात करतें हैं। एवं उनकी मरने मारने की इत्यादि सभी बातों का उत्तर देने में हम सक्षम है। परंतु इस व्यक्त विषयांतर नहीं करना चाहते। हम केवल वीडियो में उठाए मुद्दों पर बातचीत का दौर रखना चाहतें हैं। उनके ऐसे मुद्दों का जवाब फिर कभी देंगे।

Comment on YouTube by Shri Janardan Maharaj

URL 1: https://www.youtube.com/watch?v=J_vQC19eR0I&lc=UgzXNohknjpZKXhtx9J4AaABAg

URL 2: https://www.youtube.com/watch?v=487spIrAH-Y&lc=Ugw8UYoFpmefdy6XTu14AaABAg

Video: https://youtu.be/rp9scC9BTP4

Document Source Link mentioned in comment: https://bit.ly/2y3XDHm
Date: 10-Apr-2020

सनातन वैदिक हिन्दु धर्मग्रंथो के प्रमाण के साथ रियल पाटीदार पर पुछे गये सवालो के जवाब

सत्य के नामपर असत्य

कुछ दिन पहले रियल पाटीदार यु ट्यूब चैनलपर और सोशल मिडीया द्वारा सनातन सतपंथ् संप्रदाय के बारेमे एवं वडाली पावनधाम मे आयोजित कथा मे जनार्दन महाराज के द्वारा बतायें चरित्र के बारेमे कुछ लोगोने जो हमेशा नाम लिखे बगैर सवाल उठाते रहते है, क्योकी उन्हे भी पता है हमारे सवाल तथ्यहीन है और राष्ट्र, समाज को तोडने के लिये ही है। सतपथ् संप्रदायमें कही भी हिंदू देवी देवताओंको हल्का नही बताया। सतपंथ् मे तो सभी मंदीरोमे घट पूजाके माध्यमसे विश्वके सभी देवी देवताओंका आवाहन किया जाता है, उनको प्रसाद धराया जाता है और विश्व कल्याणकी प्रार्थना की जाती है। सतपंथके किसी भी ग्रंथ मे अगर सतपंथके कीसी भी संत महात्मा द्वारा देवोको हल्का बताया हो तो उसे प्रमाणित करे। सतपंथ् के अनुयायी आज वैदिक हिंदू धर्मके उत्थान हेतू हिंदु आचार्य सभा, अखिल भारतीय संत समिती, विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय अखाडा परिषद और सभी संप्रदायोके साथ मिलकर तन, मन, धन से अपना योगदान दे रहे है। इस कथामे तो यह स्पष्ट किया की भगवान श्री विष्णू के नववे अवतार भगवान जगन्नाथ है जो पूरीमे प्रकट हुये। पूरीके इतिहास मे भी इसे स्विकारा गया है की यह विष्णू के नवम् अवतार है। इसका प्रमाण भगवान जगन्नाथजी के मंदीर मे दशावतार की मूर्तीया है उसमे नवम् अवतार श्री जगन्नाथजी बताये गये। श्री धाम वडताल में भी श्री गौतम बुद्ध नही तो अलग स्वरुप बताया गया। श्री क्षेत्र कोल्हापूर मे महालक्ष्मीजी के मंदीर में भी दशावतार की मूर्तिया है जिसमे नवम् अवतार श्री विठ्ठलजी को बताया है।

परमात्मा अनंत है उनकी महिमा अपार है। उनके संकेत को समझना ही समझदारी है। समझकर भी ना समझने का ढोंग करनेवाले इन समाजकंटकोने और भी कुछ सवाल किये थे जिनका हिंदू शास्त्रोके प्रमाण देकर जवाब दिया गया है। वैसे यह जवाब मै उनको दे रहा हू जो धर्म को, धर्म की विशालता को समजते है, जो धर्म के माध्यमसे इस हिंदूराष्ट्र को जोडना चाहते है।

प्रश्न क्र. १

सवाल – अर्जुन आयें तब तक कृष्ण जिवित थे ?

सवाल – श्रीकृष्ण के शरीर को अग्निदाह अर्जुन ने दिया ?

जवाब – पावनधाम वडाली कथामें मैने यह बात कही थी की अर्जुन द्वारा श्रीकृष्ण को अग्निदाह दिया गया । शास्त्र और धर्मग्रंथोके अभ्यास के कमी के कारण अज्ञानता से और कुछ भी करके सतपंथ को बदनाम करने हेतू यह सवाल पुछा गया ।

मैने जो बात कही थी उसका प्रमाण महर्षि वेदव्यास रचित विष्णु पुराण मे है। विष्णु पुराण के अध्याय ३८ श्लोक प्रथम मे यह बात लिखी हुई है , जिसकी कॉपी साथमें दे रहा हूँ । इसे पढे और हिंदू शास्त्रोका अपमान करनेसे बाज आयें ।

મહર્ષિ વેદવ્યાસ રચિત
વિષ્ણુ પુરાણ
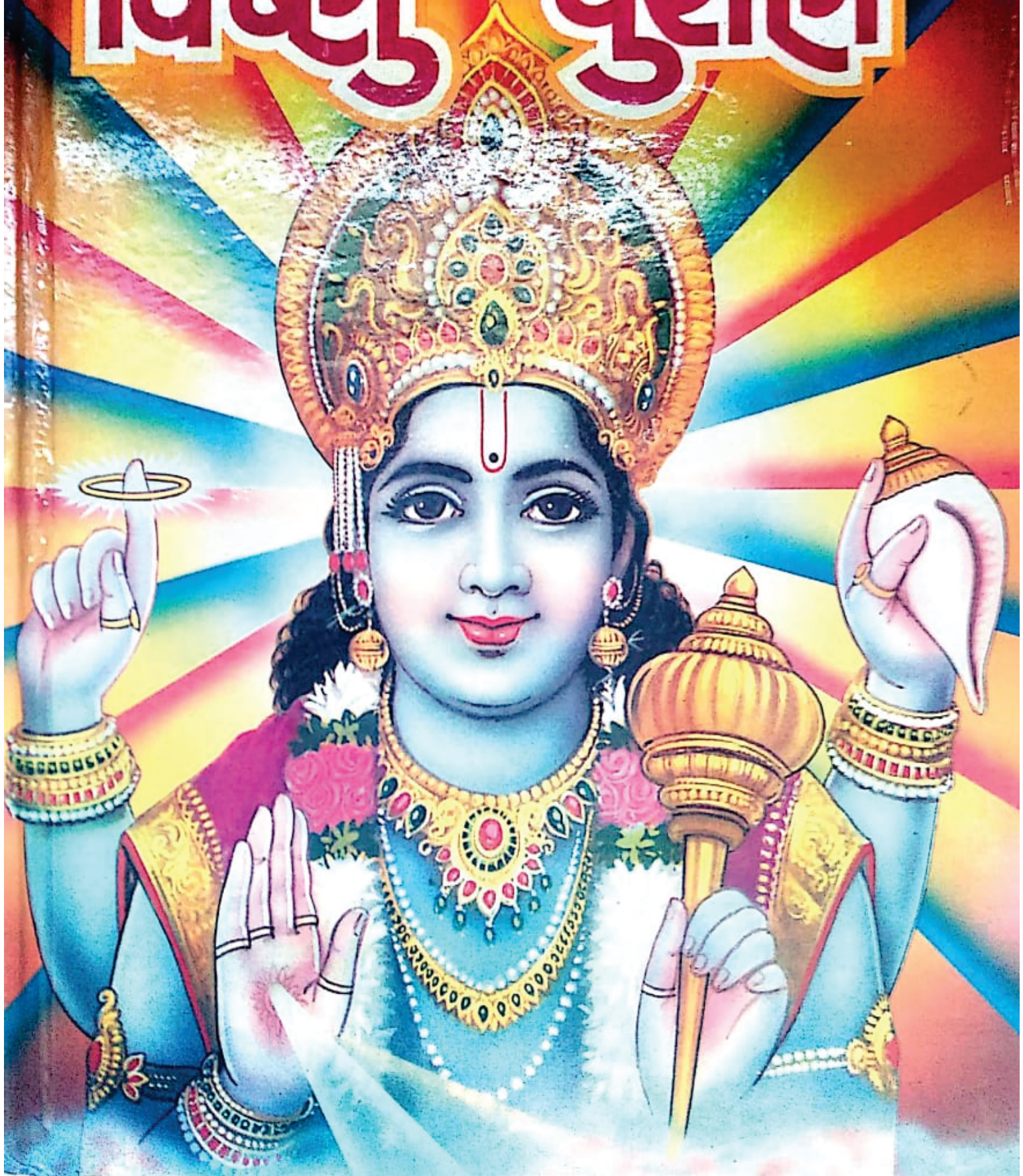
સર્વ કાંઈ કર્યું. તેણે અર્જુન પાસે જઈને વાત કરી અને તેને દ્વારકા લઈ આવ્યો અને વજ્રને યાદવોનો રાજા બનાવ્યો. બીજી બાજુ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે પણ પરબ્રહ્મને પોતાના આત્મામાં ધારણ કર્યાં અને હું જ બ્રહ્મસ્વરૂપ છું એવું ધ્યાન કર્યું. પછી હે મૈત્રેય ! તેમણે ઢીંચણ પર પગ રાખીને અર્ધાસને બેસીને યોગમાં જોડાવા માટે ચિત્ત એકાગ્ર કર્યું. તેવામાં પેલો જરા નામનો પારધી ત્યાં આવી ચડ્યો. તેણે પેલા મુસળના બચેલા ટુકડાથી જડેલું તીર ધનુષ્ય પર ચઢાવ્યું. તેણે દૂરથી પ્રભુને બેઠેલા જોયા. તેમના પગનો આકાર તેને હરણ જેવો લાગ્યો. તેથી તેણે બાણથી તેમનું તળિયું વીંધી નાખ્યું. તે પછી તે ત્યાં ગયો અને જોયું તો પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણ હતા. તે ગભરાઈ ગયો અને વારંવાર પ્રભુને પ્રણામ કરી, પ્રભુ પાસે ક્ષમા માગવા લાગ્યો.

પરાશર બોલ્યા : પ્રભુએ તેને કહ્યું : હે જરા ! ડર નહિ. મારી કૃપાથી તું સ્વર્ગમાં જા. તે જ ક્ષણે એક વિમાન આવ્યું અને પારધી તેમાં બેસીને સ્વર્ગમાં ગયો. ત્યારે પ્રભુએ પોતાના આત્માને બ્રહ્મસ્વરૂપ, અવિકારી, અચિંત્ય, શુધ્ધ, અજન્મા તથા અવિનાશી અપરિમિત એવા પરબ્રહ્મ આત્મતત્ત્વમાં યોજી દીધો અને પછી ત્રિગુણાત્મક ગતિને અતિક્રમી માનવદેહનો ત્યાગ કર્યો. ॥ ૬૯ ॥

અજન્મન્યજરેઽનાશિન્યપ્રમેયેઽખિલાત્મનિ ।
તત્યાજ માનુષં દેહમતીત્ય ત્રિવિધાં ગતિમ્ ॥ ૬૯ ॥

ઈતિ શ્રી વિષ્ણુપુરાણમાં પાંચમા અંશમાં અધ્યાય - ૩૭ સમાપ્ત

અધ્યાય - ૩૮

અર્જુને કરેલી સર્વ યાદવોની અંત્યેષ્ટિ ક્રિયા

પરાશર ઉવાચ ।

અર્જુનોઽપિ તદન્વિષ્ય કૃષ્ણરામકલેવરમ્ ।
સંસ્કારં લમ્ભયામાસ તથાન્યેષામનુક્રમાત્ ॥ ૧ ॥

પરાશર બોલ્યા : અર્જુને બળદેવ તથા શ્રીકૃષ્ણના મૃતદેહો શોધી કાઢીને તેમના તથા બીજા યાદવોની અંત્યેષ્ઠિક્રિયા કરી. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની મુખ્ય આઠ રાણીઓ શ્રીકૃષ્ણના દેહ સાથે અગ્નિમાં પ્રવેશી. રેવતીજી પણ બળરામના દેહ સાથે અગ્નિમાં પ્રવેશી ગયાં. ઉગ્રસેન, વસુદેવ, દેવકી તથા રોહિણી પણ આ સર્વ

યાદવસંહાર સાંભળ્યા પછી અગ્નિમાં પ્રવેશી ગયાં. અર્જુને તે સર્વની પ્રેતક્રિયા કરી. તે પછી બધા લોકો તથા વજ્રને સાથે લઈને અર્જુન દ્વારકામાંથી બહાર નીકળ્યા. શ્રીકૃષ્ણના દેહત્યાગ પછી સુધર્મા સભા તથા પારિજાત કલ્પવૃક્ષ પણ સ્વર્ગમાં ચાલ્યાં ગયાં. શ્રીકૃષ્ણના દેહત્યાગને દિવસે જ કાળા દેહવાળો બળવાન કલિયુગ આ પૃથ્વી પર ઊતરી આવ્યો છે. સમુદ્રે તે આખી નગરીને ડૂબાડી દીધી. ફક્ત યદુનંદન શ્રીકૃષ્ણના મહેલને ડૂબાડવા તે સફળ ન થયો. હજી પણ પ્રભુ ત્યાં અદૃશ્ય સ્વરૂપે વસવાટ કરી જ રહ્યા છે. પ્રભુનું એ સ્થાન પવિત્ર હોઈ પાપનાશક છે. તેનાં દર્શન કરીને આજે પણ દરેક મનુષ્ય પાપમાંથી છૂટી જાય છે.

ત્યાર પછી અર્જુન તે સર્વ લોકોને સાથે રાખીને પુષ્કળ ધનધાન્યવાળા પાંચનદના પ્રદેશમાં પ્રવેશ્યો. ત્યાં રહેલા ચોર લોકોને અર્જુનને એકલાને જ આટલી બધી સ્ત્રીઓને લઈ જતો જોઈને તેને લૂંટી લેવાનો અને તે સ્ત્રીઓનું હરણ કરવાનું મન થયું. તે પાપકર્મી રબારીઓ લોભી તથા મદમત્ત બનેલા હતા. તેઓ અંદરોઅંદર એવી મંત્રણા કરવા લાગ્યા કે, આ એકલો અર્જુન હાથમાં ધનુષ્ય રાખીને જેમના પતિ મરાઈ ગયા છે, એવી સ્ત્રીઓને આપણા દેખતાં જ લઈ જાય છે, તો આપણાં આ બળને ધિક્કાર હો. આ અર્જુને યુદ્ધમાં ભીષ્મને, દ્રોણને, જયદ્રથને તથા કર્ણ વગેરેને માર્યા છે, તેથી તે ગર્વથી ફુલાઈને ફરે છે પણ તે ગામડામાં રહેનારા આપણા જેવાના બળને જાણતો નથી. તે આપણું અપમાન કરી રહ્યો છે. તો આપણું બળ શું કામનું ?

પરાશર બોલ્યા : આમ અંદરોઅંદર મંત્રણા કરીને તે બધા પાપીઓ તે સ્ત્રીઓને લૂંટી લેવા દોડયા. તે જોઈને અર્જુન તેમના તરફ ફર્યા અને તેમને કહેવા લાગ્યો : હે પાપીઓ ! જો તમે મરવા ન ઇચ્છતા હો તો પાછા ફરો. પણ તે રબારીઓએ અર્જુનનાં વચનનો અનાદર કર્યો અને તેઓ સ્ત્રીઓને લૂંટવા લાગ્યા. પરાક્રમી અર્જુન તેમની આવી હિંમત જોઈને પોતાનું કદી ય નિષ્ફળ ન જતું દિવ્ય ગાંડીવ ધનુષ્ય ચડાવવા માંડયો. પણ ઘણા પ્રયત્ન પછી પણ તેને ચઢાવી ન શક્યો. ખૂબ મહેનત કરીને માંડ માંડ ધનુષ્ય ચઢાવ્યું તો તે તરત જ ઢીલું પડી ગયું. ત્યાર પછી તે દિવ્ય મંત્રો યાદ કરવા લાગ્યો પણ તે પણ તેને યાદ ન આવ્યા. પછી તો કોપાયમાન થયેલા અર્જુને લુંટારાઓ તરફ બાણ છોડવા માંડયાં. પણ તે બાણોની ધારી અસર થતી જ નહોતી. અગ્નિએ આપેલાં તેનાં અખૂટ બાણો પણ ખૂટી ગયાં, ત્યારે અર્જુનનં થયું કે, આ જ બાણોના સમુદાયથી મેં જે રાજાઓને જીત્યા હતા તે ફક્ત શ્રીકૃષ્ણનું જ બળ હતું. પછી તો તે અર્જુનની સામે જ તે ચોરો સ્ત્રીઓને હરવા માંડયા, તેથી તે ચોરો તેની હાંસી કરવા લાગ્યા. તે વિલાપ કરવા લાગ્યો કે, આ એ જ ધનુષ્ય, એ જ શસ્ત્રો, એ જ રથ અને એ

प्रश्न क्र. २

सवाल – यादव वंश का नाश होनेका श्राप तो गांधारी ने दिया था ?

जवाब – वडाली पावनधाम कथामें मैने यादव वंश का विनाश ऋषीयोके श्राप से हुआ था, ऐसी बात कही थी । जिसके उपर सवाल उठाया गया ।

श्रीमद् भागवतजीके एकादश स्कंधके पहले अध्याय मे चौदहवें श्लोकमें इसका प्रमाण मिलता है । जिसकी कॉपी साथमे जोड रहा हूँ । ध्यानपूर्वक और शुद्ध भावसे पढें जिसमे स्पष्ट वर्णन किया है कि ऋषीयोके श्राप से विनाश हुआ । जरा नामके व्याधने जो तिर चलाया था उसका अगला हिस्सा श्रापसे बने मूसल का ही था । यह व्याध पूर्वजन्मका बाली था सबको पता है, कुछ लोगोको अब पता चला । जब श्रीरामजीने बाली वध किया तब ही बाली ने कहा था की इसका बदला मै जरुर लूंगा । कर्मोका फल भगवान को भी भोगना पडा यह याद रखें और इससे कुछ बोध लेकर दुष्कर्म करना बंद करे । किसीके हृदयको तोडना, आसुओंका कारण बनना और किसीकी भावनाओंके साथ खेलना बंद करे ।

किसिकी गलतीया निकालनेसे अच्छा होगा भगवान के परम पावन कल्याणकारी, परोपकारी चरित्र से सद्गुण ग्रहण करें । इन्सान बने ।

महर्षि वेद व्यास रचित, श्रीमद भागवत
ऋषियोंको यादवोंको श्राप

ते वेषयित्वा स्त्रीवेषैः साम्बं जाम्बवतीसुतम् ।
एषा पृच्छति वो विप्रा अन्तर्वत्न्यसितेक्षणा ॥ भाग. ११/१/१४

अर्थ :- यादवकुमारोंने जांबवतीपुत्र सांबको स्त्रीका वेष पहनाकर ऋषिओं के पास ले गये और उनसे पूछा " हे ब्राह्मणो ! यह आखों में काजल लगाकर आई हुई सुंदर स्त्री गर्भवती है. वह आपको एक बात पूछना चाहती है. परंतु लज्जासे बोल नही पा रही है । "

प्रष्टुं विलज्जती साक्षात् प्रब्रूतामोघदर्शनाः ।
प्रसोष्यन्ती पुत्रकामा किंस्वित् सञ्जनयिष्यति ॥ भाग. ११/१/१५

अर्थ :- "आपका ज्ञान अबाधित है , अतः इसके गर्भसे पुत्रका जन्म हो ऐसा यह स्त्री चाहती है । इसकी प्रसूतीकी वेला अभी नजदीक भी है, तो इसके गर्भसे किसका जन्म होगा ? (पुत्र या पुत्री) आप बतानेकी कृपा करें ।"

एवं प्रलब्धा मुनयस्तानूचुः कुपिता नृप ! ।
जनयिष्यति वो मन्दा मुसलं कुलनाशनम् ॥ भाग. ११/१/१६

अर्थ :- हे परिक्षित ! जब वे यादवकुमार ऋषियों की इस तरह चेष्टा करने लगे, तब उन समस्त ऋषिओंने क्रोधित होकर कहा, अरे मूर्ख यादवकुमारो ! इसके गर्भसे तुम्हारे सारे कुलका विनाश करनेवाला मुसल पैदा होगा । "

क्रोधित हो कर केवल उनका भविष्य कहा है । श्राप नहीं दिया है । श्राप और क्रोध मे बहुत बाद अंतर होता है

तच्चूर्णयित्वा मुसलं यदुराजः स आहुकः ।
समुद्रसलिले प्रास्यल्लोहं चास्यावशेषितम् ॥ भाग. ११/१/२

अर्थ :- "तब घबडाकर उन यादवकुमारोंने यदुराज उग्रसेन को सारा वृत्तांत ब तब उग्रसेन महाराजाने उस मुसलका पिष्ट बनाकर समुंदरमें बहा दिया और शेष रहे अल्पसे उस मुसलके हिस्से को भी समुंदरमें फेंक दिया ।"

कश्चिन्मत्स्योऽग्रसीलेहं चूर्णानि तरलैस्ततः ।
उह्यमानानि वेलायां लग्नान्यासन् किलैरकाः ॥ भाग.११/१/२२

अर्थ :- " समुंदरमें फेका हुआ वह छोटासा मुसलका हिस्सा किसी मत्स्यने निगल लीया. और वह मुसलका बनाया हुआ चूर्ण लहरों के माध्यमसे तैरता हुआ समुंदरके किनारे पर जमा हुआ । कुछ दिनों के बाद वही मुसलका चूर्ण "एरका" (जिसके पत्ते खड्गके जैसे तेज होते है) नामक घास बनकर किनारे पर उगा ।"

आस्थाय धाम रममाण उदारकीर्तिः
संहर्तुमैच्छत कुलं स्थितकृत्यशेषः ॥१०॥

कर्माणि पुण्यनिवहानि सुमङ्गलानि
गायज्जगत्कलिमलापहराणि कृत्वा ।
कालात्मना निवसता यदुदेवगेहे
पिण्डारकं समगमन् मुनयो निसृष्टाः॥११॥

विश्वामित्रोऽसितः कण्वो दुर्वासा भृगुरङ्गिराः ।
कश्यपो वामदेवोऽत्रिर्वसिष्ठो नारदादयः ॥१२॥

क्रीडन्तस्तानुपव्रज्य कुमारा यदुनन्दनाः ।
उपसंगृह्य पप्रच्छुरविनीता विनीतवत् ॥१३॥

ते वेषयित्वा स्त्रीवेषैः साम्बं जाम्बवतीसुतम् ।
एषा पृच्छति वो विप्रा अन्तर्वत्न्यसितेक्षणा ॥१४॥

प्रष्टुं विलज्जती साक्षात् प्रब्रूतामोघदर्शनाः ।
प्रसोष्यन्ती पुत्रकामा किंस्वित् सञ्जनयिष्यति ॥१५॥

एवं प्रलब्धा मुनयस्तानूचुः कुपिता नृप ।
जनयिष्यति वो मन्दा मुसलं कुलनाशनम् ॥१६॥

तच्छ्रुत्वा तेऽतिसन्त्रस्ता विमुच्य सहसोदरम् ।
साम्बस्य ददृशुस्तस्मिन् मुसलं खल्वयस्मयम्[1] ॥१७॥

किं कृतं मन्दभाग्यैर्नः किं वदिष्यन्ति नो जनाः ।

वे पूर्णकाम प्रभु द्वारकाधाममें रहकर क्रीडा करते रहे और उन्होंने अपनी उदार कीर्तिकी स्थापना की। (जो कीर्ति स्वयं अपने आश्रय तकका दान कर सके वह उदार है।) अन्तमें श्रीहरिने अपने कुलके संहार—उपसंहारकी इच्छा की; क्योंकि अब पृथ्वीका भार उतरनेमें इतना ही कार्य शेष रह गया था ॥ १० ॥ भगवान् श्रीकृष्णने ऐसे परम मङ्गलमय और पुण्य-प्रापक कर्म किये, जिनका गान करनेवाले लोगोंके सारे कलिमल नष्ट हो जाते हैं। अब भगवान् श्रीकृष्ण महाराज उग्रसेनकी राजधानी द्वारकापुरीमें वसुदेवजीके घर यादवों-का संहार करनेके लिये कालरूपसे ही निवास कर रहे थे। उस समय उनके विदाकर देनेपर—विश्वामित्र, असित, कण्व, दुर्वासा, भृगु, अङ्गिरा, कश्यप, वामदेव, अत्रि, वसिष्ठ और नारद आदि बड़े-बड़े ऋषि द्वारकाके पास ही पिण्डारकक्षेत्रमें जाकर निवास करने लगे थे ॥ ११-१२ ॥

एक दिन यदुवंशके कुछ उद्दण्ड कुमार खेलते-खेलते उनके पास जा निकले। उन्होंने बनावटी नम्रतासे उनके चरणोंमें प्रणाम करके प्रश्न किया ॥ १३ ॥ वे जाम्बवतीनन्दन साम्बको स्त्रीके वेषमें सजाकर ले गये और कहने लगे, 'ब्राह्मणो! यह कजरारी आँखोंवाली सुन्दरी गर्भवती है। यह आपसे एक बात पूछना चाहती है। परन्तु स्वयं पूछनेमें सकुचाती है। आपलोगोंका ज्ञान अमोघ—अबाध है, आप सर्वज्ञ हैं। इसे पुत्रकी बड़ी लालसा है और अब प्रसवका समय निकट आ गया है। आपलोग बताइये, यह कन्या जनेगी या पुत्र?' ॥ १४-१५ ॥ परीक्षित्! जब उन कुमारोंने इस प्रकार उन ऋषि-मुनियोंको धोखा देना चाहा, तब वे भगवत्प्रेरणासे क्रोधित हो उठे। उन्होंने कहा—'मूर्खो! यह एक ऐसा मूसल पैदा करेगी, जो तुम्हारे कुलका नाश करनेवाला होगा ॥ १६ ॥ मुनियोंकी यह बात सुनकर वे बालक बहुत ही डर गये। उन्होंने तुरंत साम्बका पेट खोलकर देखा तो सचमुच उसमें एक लोहेका मूसल मिला ॥ १७ ॥ अब तो वे पछताने लगे और कहने लगे—'हम बड़े अभागे हैं। देखो, हमलोगोंने

१. खल्वयोमयम् ।

क्रोधित हो कर केवल उनका भविष्य कहा है । श्राप नहीं दिया है ।
श्राप और क्रोध मे बहुत बाद अंतर होता है ।

इति विह्वलिता गेहानादाय मुसलं ययुः ॥१८॥
तच्चोपनीय[1] सदसि परिम्लानमुखश्रियः।
राज्ञ आवेदयाञ्चक्रुः सर्वयादवसन्निधौ ॥१९॥
श्रुत्वामोघं विप्रशापं दृष्ट्वा च मुसलं नृप।
विस्मिता भयसन्त्रस्ता बभूवुर्द्वारकौकसः ॥२०॥
तच्चूर्णयित्वा[2] मुसलं यदुराजः स आहुकः।
समुद्रसलिले प्रास्यल्लोहं चास्यावशेषितम् ॥२१॥
कश्चिन्मत्स्योऽग्रसील्लोहं चूर्णानि तरलैस्ततः।
उह्यमानानि वेलायां लग्नान्यासन् किलैरकाः ॥२२॥
मत्स्यो गृहीतो मत्स्यघ्नैर्जालेनान्यैः सहार्णवे।
तस्योदरगतं लोहं[3] स शल्ये लुब्धकोऽकरोत् ॥२३॥
भगवाञ्ज्ञातसर्वार्थ ईश्वरोऽपि तदन्यथा।
कर्तुं नैच्छद् विप्रशापं कालरूप्यन्वमोदत ॥२४॥

यह क्या अनर्थ कर डाला ! अब लोग हमें क्या कहेंगे !! इस प्रकार वे बहुत ही घबरा गये तथा मूसल लेकर अपने निवासस्थानमें गये ॥ १८ ॥ उस समय उनके चेहरे फीके पड़ गये थे। मुख कुम्हला गये थे। उन्होंने भरी सभामें सब यादवोंके सामने ले जाकर वह मूसल रख दिया और राजा उग्रसेनसे सारी घटना कह सुनायी ॥ १९ ॥ राजन् ! जब सब लोगोंने ब्राह्मणोंके शापकी बात सुनी और अपनी आँखोंसे उस मूसलको देखा, तब सब-के-सब द्वारकावासी विस्मित और भयभीत हो गये; क्योंकि वे जानते थे कि ब्राह्मणोंका शाप कभी झूठा नहीं होता ॥ २० ॥ यदुराज उग्रसेनने उस मूसलको चूरा-चूरा करा डाला और उस चूरे तथा लोहेके बचे हुए छोटे टुकड़ेको समुद्रमें फेंकवा दिया। (इसके सम्बन्धमें उन्होंने भगवान् श्रीकृष्णसे कोई सलाह न ली; ऐसी ही उनकी प्रेरणा थी) ॥ २१ ॥

परीक्षित् ! उस लोहेके टुकड़ेको एक मछली निगल गयी और चूरा तरङ्गोंके साथ बह-बहकर समुद्रके किनारे आ लगा। वह थोड़े दिनोंमें एरक (बिना गाँठकी एक घास) के रूपमें उग आया ॥ २२ ॥ मछली मारनेवाले मछुओंने समुद्रमें दूसरी मछलियोंके साथ उस मछलीको भी पकड़ लिया। उसके पेटमें जो लोहेका टुकड़ा था, उसको जरा नामक व्याधने अपने बाणके नोकमें लगा लिया ॥ २३ ॥ भगवान् सब कुछ जानते थे। वे इस शापको उलट भी सकते थे। फिर भी उन्होंने ऐसा करना उचित न समझा। कालरूपधारी प्रभुने ब्राह्मणोंके शापका अनुमोदन ही किया ॥ २४ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायामेकादशस्कन्धे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

वसुदेवजीके पास श्रीनारदजीका आना और उन्हें राजा जनक तथा नौ योगीश्वरोंका संवाद सुनाना

श्रीशुक उवाच

गोविन्दभुजगुप्तायां द्वारवत्यां कुरूद्वह।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—कुरुनन्दन ! देवर्षि नारदके मनमें भगवान् श्रीकृष्णकी सन्निधिमें रहनेकी बड़ी लालसा थी। इसलिये वे श्रीकृष्णके निज बाहुओंसे

१. तं चोपनीय। २. तं चूर्णयित्वा। ३. लौहं शूलेषु लु०।

प्रश्न क्र. ३

सवाल – दुर्योधन मरे नही बेहोश थे ?

सवाल – श्रीकृष्ण का शरीर जला नही मछली ले गई ?

जवाब – भीम और दुर्योधन का युद्ध हुआ जिसमे दुर्योधनकी मृत्यू नही हुई वह बेहोश हुआ था। अश्वत्थामा और कृपाचार्य ने दुर्योधन के कहने पर ही पांडवोके शिर काटकर लानेको कहा था लेकीन पांडव समझकर अश्वत्थामाने कपटसे निंदमे पांडवपूत्रोके शिर काट दिये और दुर्योधन के पास ले आया था। जो कथा कुछ लोगोके अलावा सबको पता है।

भगवान जगन्नाथजीकि जो बात आती है उसमे यह जरुरी है की उन्हे नवम्अवतार माना गया। अलग अलग पूराणोमें इसकी चर्चा आती है, जिसके नाम साथमे भेज रहा हूँ। मैने कहा था श्रीकृष्णजीके कलेवर से जगन्नाथजी प्रकट हुये और श्री जगन्नाथजी के इतिहासमे लिखा है परब्रम्ह श्रीकृष्णजीने दारुशरीर धारण किया था जो जगन्नाथ बने। दारुशरीर मतलब वृक्ष। जो समंदर मे मिला। जिसका प्रमाण साथमे जोड रहा हूँ। भगवानके हर अवतार का चरित्र भिन्न ग्रंथोमे थोडा भिन्न जरुर है लेकिन भगवान की लिलाओका उद्देश समझना, संकेत को समझना ज्ञानी पुरुष का लक्षण है।

भगवान श्री जगन्नाथजी के हाथ पैर पलक, नाक,जिव्हा, उँगलिया नही है इसकी अलग अलग कथाये है जैसे १५ वे दिन द्वारको खोल देना लेकीन उसकी अध्यात्मिक जानकारी अलग है। कहनेका तात्पर्य यह है की परमात्मा अनंत है वह अलख है उसे हम लिख नही सकते, उसका वर्णन नही कर सकते। उसे बस अनुभव कर सकते है।

श्रीकृष्ण का अवतार कार्य पूर्ण होने के बाद श्री जगन्नाथजीका प्राकट्य हुआ है और जगन्नाथजी को श्रीकृष्णही माना जाता है, साथमे माता सुभद्रा औ बलराम भैया उसका प्रमाण है, तो यह बाते कुछ कहती है। अगर समझना हो।

का रंग देवी सुभद्रा)। सम्पूर्ण प्रकाशमान रूप सफेद, शुभ्र (बलभद्र)।

प्रश्न : श्रीजगन्नाथ की एकल मूर्त्ति की स्थापना करने में क्या परेशानी थी?

उत्तर : ऐसा करने पर ब्रह्म के 'एकोऽहं बहुस्याम्' की भावना में बाधा पहुँचती।

प्रश्न : मूर्त्ति तो चतुर्द्धा, पर रत्नसिंहासन में सप्तावरण क्या है?

उत्तर : आवरण कहने का तात्पर्य सजावट से है। जैसे रत्नावरण यानी रत्नों से सुसज्जित। रत्नसिंहासन पर आवरित (पूजित) मूर्त्तियाँ सात हैं। (१) बड़ठाकुर श्रीबलभद्र (२) देवी सुभद्रा (३) महाप्रभु श्रीजगन्नाथ (४) महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के सामने दाहिनी ओर रजत(चाँदी) प्रतिमा भूदेवी (५) सामने बाईं ओर श्रीदेवी (स्वर्णप्रतिमा लक्ष्मी) (६) बाईं ओर माधव तथा (७) दंडरूपी सुदर्शन।

प्रश्न : कोई-कोई उन्हें सप्तावरण मूर्त्ति भी कहते हैं, क्यों?

उत्तर : ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये सभी आवरणयुक्त मूर्त्तियाँ हैं। आप जिसे जिस रूप में देखते हैं, दूसरों के भावों के अनुरूप वे दूसरे रूप में लगते हैं। रूप निश्चित न होने के कारण आवरणयुक्त हैं।

प्रश्न : किन पुराण शास्त्रों में श्रीजगन्नाथ की कथा का वर्णन मिलता है?

उत्तर : 'ब्रह्मपुराण', 'विष्णुपुराण', 'ब्रह्मवैवर्त्तपुराण', 'पद्मपुराण', 'स्कंदपुराण', 'इंद्रनीलमणि पुराण', 'कपिलसंहिता', 'वामदेव संहिता', 'शौनक संहिता', 'नीलाद्रिमहोदय', 'महापुरुषविद्या' तथा 'सारला महाभारत' आदि शास्त्र श्रीजगन्नाथ की प्रशस्तिगान में शतमुख हैं। इनमें से सामग्रिक भाव से 'स्कंदपुराण' श्रीजगन्नाथ का इतिवृत्त वर्णन करता है तो 'नीलाद्रिमहोदय' में रीतिनीति तथा 'इंद्रनीलमणिपुराण' में तत्त्वों का विशेष वर्णन मिलता है।

प्रश्न : स्कंदपुराण क्या है?

उत्तर : कार्त्तिकेय का दूसरा नाम स्कंद है। रहस्यघन पुरुषोत्तम तथा पुरुषोत्तमक्षेत्र का विवरण पहले स्कंद ने अपने पिता शंकर भगवान से सुनकर मंदर पर्वत पर सिद्ध तथा देवताओं को सुनाया था। बाद में महर्षि जैमिनी ने ये सब बातें मुनि-ऋषियों को कह सुनाईं। स्कंदपुराण के रचयिता व्यासदेव हैं।

प्रश्न : दारुब्रह्म ने किस युग में आत्मप्रकाश किया था ?

उत्तर : प्रथम परार्द्धे ब्रह्मनीलेंद्रमणि विग्रह:।
एवं गते परार्द्धे तु दारुदेहधरं परम्।। (महापुरुषविद्या, ३/१४५)

ब्रह्मा के प्रथम परार्द्ध में ब्रह्मनीलेंद्रमणिविग्रह (नीलमाधव) के रूप में विराजमान थे तथा द्वितीय परार्द्ध में वे दिव्य दारुमय रूप में परिणत हुए। द्वितीय परार्द्ध का मतलब है सप्तम मन्वंतर का सत्ययुग।

प्रश्न : नीलाचल का तात्विक अर्थ क्या है ?

उत्तर : निर्विकारे लयं यांति यत्रचैव हि जंतव:।
कदापि न चलत्येव तस्मात् नीलाचलस्मृत:।। (म.वि. २/१८)

प्रलयकाल में जो भूमि अविचलित रहती है और उस क्षेत्र के सभी जीव चराचर विकारशून्य भाव से अविचलित रहते हुए परमपद में लीन होते हैं, वही नीलाचल है।

प्रश्न : परम्ब्रह्म जगन्नाथ दारुशरीर क्यों हुए ?

उत्तर : विविध शास्त्रपुराणों में इसका कारण कई प्रकार से वर्णित है-

एवं जीवनद्रुमस्य सतात्मा विलयांतरे।
सदेह भवतिदारु दहनार्थ विशेषित:।।

ब्रह्मासत्तामयंदारु सर्व कर्मे प्रयोजनम्।
तारकं द्रावकं सौख्यं तथैव दारवीतनु:।। (इंद्रनीलमणिपुराण)

जीवन एक वृक्ष और नश्वर है। यही बात जगतवासियों को बताने के लिए प्रभु का दारुरूप है।

खंडनात् सर्वदु:खानां अखंडानंददानत:।
स्वभावात् दारु एषोऽहि परम्ब्रह्माभिधीयते।। (स्कंदपुराण, २८/४०)
दारयेत्येवदु:खानि ददात्यानंदमव्ययं।
तस्मात् स्वभावतोदारु: एष वेदेषु निश्चितम्।। (म.वि. ६/४)

दारु 'दा' और 'दो' धातु से निष्पन्न शब्द है। 'दा' धातु अन् +दान अर्थात् देना, 'दो' दातु अन् +दान अर्थात् छेदन या खंडन। जो सभी दुखों को खंडन करते हैं और अखंड आनंद प्रदान करते हैं, वे दारु।

प्रश्न : शंख-चक्र-गदा-पद्म आदि आयुध धारण न करते हुए भी श्रीजगन्नाथ विष्णु कैसे हुए ?

उत्तर : ये सारे आयुध विष्णु के हैं; यह शास्त्र सम्मत है। महाप्रभु श्रीजगन्नाथ प्रकाशमान (दृश्य) भाव से इन आयुधों को धारण नहीं करते, पर उन्होंने दारु में शंख-चक्र-गदा-पद्म आदि धारण किए हुए होने के कारण वे अवश्य ही विष्णु हैं।

प्रश्न : पंच 'म'कार उपासना क्या है ?

उत्तर : यह एक तंत्र परम्परा है। पंच मकार हैं- मद्य, मांस, मत्स्य, मैथुन एवं मुद्रा। ब्रह्म निरंजन में लीन होने जैसे तत्त्व को मद्य कहा जाता है। लाल ताम्बे के पात्र में 'घषाजल' ही मद्यरूप में नैवेद्य है। वाक्संयम को मांस साधना कहा जाता है। इसमें विविध प्रकार के उड़द के पीठा और अदरक आदि भोग लगता है। एकाग्र स्तुतिपाठ मत्स्यसाधना है। साग-सब्जियों के साथ हींग मत्स्य के रूप में पूजा है। आत्मशक्तिलाभ के लिए कुंडलिनी साधना इसके लिए विभिन्न हस्तमुद्रा, सूर्यमुद्रा, कूर्ममुद्रा, योनिमुद्रा प्रदर्शन। आत्मा परमात्मा की मिलनेच्छा ही मैथुन है। इसके लिए लिंगपुष्प (केशरयुक्त पुष्प) के साथ योनिपुष्प टगर व तराट आदि को युग्मरूप से प्रदान किया जाता है ।

प्रश्न : दुर्गामाधव उपासना क्या है ?

उत्तर : देवी दुर्गा के साथ माधव की एकत्र उपासना को दुर्गामाधव उपासना कहते हैं। यह एक विचित्र परम्परा है। शिवशक्ति दुर्गा के साथ माधव का मिलन रहस्यमय अवश्य है। आश्विन मास कृष्णपक्ष अष्टमी (दुर्गाष्टमी) के दिन दुर्गापूजा के लिए देवी सुभद्रा से प्रार्थना की जाती है। आज्ञामाल मिलने के बाद दुर्गामूर्त्ति को माजणामंडप पर स्नान करवाया जाता है तथा माधव को लेकर दुर्गामाधव को एक साथ रुंधा जाता है। षोलपूजा के प्रथम आठ दिनों तक ये दोनों माता विमला के मंदिर के एक पलंग पर रहते हैं तथा अंतिम आठ दिन दोलमंडप साहि नारायणी के मंदिर में जाकर नैवेद्य ग्रहण करते हैं। प्रकृति और पुरुष का मिलन ही दुर्गामाधव उपासना है।

प्रश्न : श्रीजगन्नाथ की आँखें तो हैं, पर पलकें नहीं; सर्वांग है पर कान नहीं; नासा है पर छिद्र नहीं, अधर है पर मुख (जिह्वा) नहीं; हाथ है पर ऊँगलियाँ नहीं- क्या कारण है?

उत्तर : महाप्रभु जगन्नाथ प्रतीकात्मक विग्रह होने के कारण उनमें 'सर्वेंद्रिय गुणाभास

सर्वेंद्रिय विवर्जितम्' वाली रीति से सभी इंद्रियों का आभास है पर वे इंद्रिय सम्पूर्ण नहीं। यह एक पंचतन्मात्रिक लीला है। शरीर में ज्ञानेंद्रिय पाँच होते हैं, जैसे- कान, आँख, नाक, चर्म तथा जिह्वा। इनका काम है कान- शब्दों को सुनना, आँख- रूप देखना, नाक- गंध का पता लगाना, चर्म- स्पर्श करना, जिह्वा- रसस्वाद को अनुभव करना। इन शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध को पंचतन्मात्रा कहा जाता है। महाप्रभु बिना कान के ही सुनते हैं, बिना हाथों के ही स्पर्श करते हैं, पलक विहीन आँखों से रूप दर्शन करते हैं, बिना जिह्वा के रसास्वादन करते हैं, और बिना नासारंध्रों के गंध आघ्राण करते हैं। महाप्रभु में इंद्रियों का आभास देकर तन्मात्रा को परिस्फुट किया गया है।

प्रश्न : महाप्रभु की पतितपावन लीला क्या है ?

उत्तर : महद्योगी के अनुसार पतित कोई जाति नहीं। मन और बुद्धि जब निम्नगामी होते हैं, उसे पतित कहा जाता है। प्रभु कृपा करके जब जीव को शुद्ध मन तथा सद्बुद्धि देते हैं, तब जीव की चेतना ऊर्ध्वगामी होती है और महाप्रभु के पास शरणागति आती है। यही है पतितपावन लीला।

प्रश्न : स्नानगुंडिचा के अलावा श्रीजिऊओं ने कभी और भी सिंहासन छोड़ा है क्या ?

उत्तर : आज तक महाप्रभु ने स्नानगुंडिचा के अलावा बाईस बार सिंहासन छोड़ने का ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। विदेशी, यवन व स्वदेशी कुलांगारों के आक्रमण के कारण बीस बार तथा गर्भगृह की मरम्मत के लिए दो बार महाप्रभु ने सिंहासन छोड़ा है। सन् १८७५ ईस्वी में गर्भगृह से पत्थर खिसकने के कारण भगवान को गुंडिचा घर में अस्थायी सिंहासन पर रखा गया था। सन् १९९२ ईस्वी नवम्बर २९ के दिन गर्भगृह मरम्मत के लिए श्रीजिऊओं को अणसर पिंडि के निकट एक अस्थायी काष्ठ-सिंहासन पर स्थानांतरित किया गया था।

प्रश्न : रथयात्रा की शुरुआत कब हुई थी ?

उत्तर : डॉ. सत्यनारायण राजगुरु के मतानुसार १२२३ ईस्वी के बाद किसी समय श्रीजगन्नाथ दारु निर्मित होने के कारण शाबर व ब्राह्मण्य परम्परा के मेल से जन्मोत्सव यात्रा अथवा रथयात्रा का आयोजन किया गया। अनंगभीमदेव की पटरानी गुंडिचोड़ के द्राक्षाराम अभिलेख के अनुसार रथयात्रा का शुभारम्भ काल सम्भवत: १२२८ ईस्वी है।

हवा का काम है चलना, दिये का काम है जलना ।

वो अपना काम करती है, मै अपना काम करता हूँ ।।

ऐसे व्हिडियो बनाकर हिंदुओकी भावनाओके साथ और श्रद्धाके साथ कुछ लोग खिलवाड कर रहे है । इससे हिंदुधर्म की ही बदनामी होती है । अगर इन लोगोको कुछ विरोध है तो इस विरोध को नेट पर ले जाने की क्या आवश्यकता है ? लेकीन हिंदूधर्म को बदनाम करने हेतू समाज को तोडने हेतू यह सब हो रहा है । साथमें बैठकर भी तो बाते हो सकती है । इन्हे खुद पता है यह बाते जरुरी नही है बस मनमें समाजमे जहर घोलने का काम करते है । नियत साफ होती तो अपना नामभी लिखवाते । सामने क्यो नही आते क्योकी बाते झूठ है ।

इतनी सी बाते पुछनी थी तो इतना लाखोका खर्चा व्हिडीयो बनानेके लिये करनेकी जरुरत नही थी किसी जरुरतमंदको रोटी खिला देते । यह लोग कहते है संत वह नही होते जो धमकिया देते है । संतोके बारेमे एक बात याद रखना, जरुरत पडनेपर दधिची जैसे संत राक्षसोके वध के लिये अपनी हड्डीयाभी दे देते है और धर्मरक्षा के लिये परशुराम की तरह हाथोमे शस्त्रभी धारण करते है । सभी देवी देवताओके हाथोमे शस्त्र है यह इसीका प्रमाण है । संत अपने लिये नही राष्ट्र, धर्म के लिये जिते है ।

व्हिडीयो के अंत मे यह समाजद्रोही लिखते है, हम लोक आपके दुश्मन नही है, हमे धमकीया आती है, हमारा कोई स्वार्थ नही है, हम आपके लिये मेहनत करते है, हमारी भावनाओको पहचानो..... यह पढकर तो हसी आती है । इन वाक्योमें कितनी लाचारी है । इस लाचारी का कारण है झूठ, असत्य ।

कुछ बाते अंत मे इन्होने इंग्लिश मे लिखी जो सबकी समझमे ना आये । यह लिखते है इस व्हिडीयोका उद्देश कीसीभी व्यक्ती, संस्थानका अपमान करना नही है । इस व्हिडीयोमे व्यक्त किये गिये दृश्य व्यक्तिगत राय है । कोई भी निर्णय लेनेसे पहले व्यक्तिगत विवेक का प्रयोग करे । ऐसी विनती करते है । ....अब इसे पढकर पता चलता है की समाजके साथ कैसा खिलवाड यह लोग कर रहे है । इनकी व्यक्तिगत राय है तो औरोकी भी हो सकती है । सारी बाते झूठी, असत्य है यह पता होनेके कारण भागने का रास्ताभी बना दिया । कोई केस ना कर दें ।

हिंदूधर्म, भारतवर्ष और समाजको तोडने का काम बंद करो। जब संपूर्ण कोरोना व्हायरस से साथ मिलकर लढ रहा है तब आप लोग इन बातोको लेकर समाजको और ज्यादा विचलित करना चाहते हो ? आप जो कर रहे हो वह कोरोना व्हायरस से भी जहरीला है ।सत्य की राहपर चलनेवालोको ऐसी परेशानीया आती है । माँ भगवती सीता ने लक्ष्मण रेषा को लांघ दीया तो भी लोगोने गलत कहा और साधूभेषधारी रावण को भिक्षा ना देती तो भी लोग गलत कहते । ऐसी अवस्था रहती है जो धर्म की राहपर चलते है । लेकीन अंतमे विजय सत्यकी होती है ।

अगर मेरी इन बातोको झूठ साबीत करनेका मन हो तो ज्यादा खर्च मत करना । वह खर्च समाजके कल्याणमे देना ।

पांडवोके प्लॅस्टिक सर्जरी की जो बात है वह तो श्रोताओके लिये सहजतासे की गई थी । उसका मतलब पांडओके स्वरुप बदल दिये गये थे । आप सारे कभी धर्मके रस्ते चलेही नही हो । वैसे आपका वह सौभाग्य भी नही है । राम कृपा बिना सुलभ नही होता । सिंहके बारेमे जो बात है वह सद्‌गुरुजीके चरित्र की है । किसीभी संतोके चरित्रको, प्रमाण की जरुरत नही होती । संत चरित्र अगर विश्वास है तो समझता है । वैसे मैने कथामे शकुनीका चरित्रभी बताया था, जिसने भाईयोमे झगडा लगाया उसके बारेमे कुछ पुछ लेते । वडाली पावनधाम कथामे, कुवारी कन्यापुजन हुआ, मातृ पितृ पुजन हुआ, समाजके अखंडीतता की बाते हुई संस्कारोकी बाते हुई वह सुनते, लेकीन जाकी रही भावना जैसी । पीलीया के पेशंट को सब पिला ही नजर आता है ।

वडाली मे मैने जो खरी खोटी सुनाई थी उसके बाद पता था यह बदनामीवाली साधना आप लोगोकी चालू हो जायेगी । भुगतोगे यही भुगतोगे ।

'सच्चाई और अच्छाई की तलाश में
पूरी दुनियाँ घूमले,
अगर वो हमारे अंदर नही है,
तो कहीं नहीं है ।''

यह तो प्रेमकी बात है उधो बंदगी तेरे बस की नही है ।

फैजपूर